❁ 14 जुलाई 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❁

✺ ज्ञान-

1] आत्मा गुल-गुल बन जाती है फिर कर्तव्य भी अच्छे करती है। वहाँ पंछी जानवर भी अच्छे-अच्छे रहते हैं। यहाँ चिड़िया मनुष्यों को देख भागती है, वहाँ तो ऐसे अच्छे-अच्छे पंछी तुम्हारे आगे-पीछे घूमते फिरते रहेंगे वह भी कायदेसिर। ऐसे नहीं घर के अन्दर घुस आयेंगे, गंद करेके जायेंगे। नहीं, बहुत कायदे की दुनिया होती है।

2] सबमें अपना-अपना गुण है। कोई में अच्छे गुण होते हैं तो कहा जाता है यह कितना गुणवान है। जो सर्विसएबुल होंगे वह सदैव मीठा बोलेंगे। कडुवा कभी बोल नहीं सकेंगे। जो कडुवा बोलने वाले है उनमें भूत है। देह-अभिमान है नम्बरवन, फिर उनके पीछे और भूत प्रवेश करते हैं।

3] तुमको मेहनत ऐसी करनी है जैसे कल्प पहले की है, अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो फिर आहिस्ते-आहिस्ते सारे विश्व की डोर तुम्हारे हाथों में आने वाली है।

4] कोई-कोई को अच्छी बात समझाओ तो भी अशान्त हो पड़ते हैं, तो छोड़ देना चाहिए। खुद भी ऐसा होगा तो एक-दो को तंग करता रहेगा। यह पिछाड़ी तक रहेगा। माया भी दिन-प्रतिदिन कड़ी होती जाती है।

5] बेहद का बाप कहते हैं तुम आत्मा हो। यह नॉलेज एक बाप के सिवाए कोई दे नहीं सकता। रचता और रचना का ज्ञान यह है पढ़ाई, जिससे तुम स्वदर्शन चक्रधारी बन चक्रवर्ती राजा बनते हो। अलंकार भी तुम्हारे हैं परन्तु तुम ब्राह्मण पुरूषार्थी हो इसलिए यह अलंकार विष्णु को दे दिया है। यह सब बातें– आत्मा क्या है, परमात्मा क्या है, कोई भी बता नहीं सकते। आत्मा कहाँ से आई, निकल कैसे जाती, कभी कहते हैं आंखों से निकली, कभी कहते हैं भ्रकुटी से निकली, कभी कहते हैं माथे से निकल गई। यह तो कोई जान नहीं सकता।

6] अभी तुम जानते हो– आत्मा शरीर ऐसे छोड़ेगी, बैठे-बैठे बाप की याद में देह का त्याग कर देंगे। बाप के पास तो खुशी से जाना है। पुराना शरीर खुशी से छोड़ना है। जैसे सर्प का मिसाल है। जानवरों में भी जो अक्ल है, वह मनुष्यों में नहीं है। वह सन्यास आदि तो सिर्फ दृष्टांत देते हैं।

7] तो तुम बच्चे विश्व का मालिका बनते हो। बाप किता ऊंच बनाते हैं, गीत में भी है ना सारे विश्व की बागड़ोर तुम्हारे हाथ में होगी। कोई छीन न सके।

8] कई बच्चे कहते हैं वैसे तो मैं ठीक हूँ लेकिन यह कारण है ना– संस्कारों का, व्यक्तियों का, वायुमण्डल का बंधन हैं.... परन्तु कारण कैसा भी हो, क्या भी हो तीव्र पुरूषार्थी सभी बातों को ऐसे क्रॉस करते हैं जैसे कुछ है ही नहीं। वह सदा मनोरंजन का अनुभव करते हैं। ऐसी स्थिति को कहा जाता हैं उड़ती कला और उड़ती कला की निशानी है डबल लाइट। उन्हें किसी भी प्रकार का बोझ हलचल में ला नहीं सकता।

✺ योग-

1] बाप भी आत्मा को देखते हैं। सिर्फ देखने से आत्मा शुद्ध नहीं बनेगी। वह तो जितना बाप को याद करेंगे उतना शुद्ध होते जायेंगे। यह तो तुम्हारा काम है। बाप को याद करते-करते सतोप्रधान बनना है।

2] माया के तूफान आते हैं फिर **प्रैक्टिस हो जाती है बाप को याद करने की**, एकदम जैसे अचल-अडोल रहते हैं।

✺ धारणा-

1] मीठे बच्चे– कलंगीधर बनने के लिए अपनी अवस्था अचल-अडोल बनाओ, जितना तुम पर कलंक लगते हैं, उतना तुम कलंगीधर बनते हो।

2] बाप की आज्ञा है– मीठे बच्चे, तुम्हें कोई सी भी खिट-खिट नहीं करनी है। शान्ति में रहना है। अगर कोई को तुम्हारी बात अच्छी नहीं लगती तो तुम चुप रहो। एक-दो को तंग नहीं करो। बापदादा के दिलतख्तनशीन तब बन सकते तब जब अन्दर कोई भी भूत न रहे, मुख से कभी कोई कडुवे बोल न निकलें, मीठा बोलना जीवन की धारणा हो जाए।

...2

3] अभी तुमको अपनी आत्मा को सुधारना है। पवित्र बनना है। सतयुग में शरीर भी पवित्र मिलेगा। आत्मा को शुद्ध करने के लिए एक बाप को याद करना होता है।

4] बाप कहते हैं तुमको ऐसा बनना है जैसे भ्रमरी कीड़े को ट्रांसफर कर देती है, तुमको भी मनुष्य रूपी कीड़े को ट्रांसफर कर देना है। सिर्फ दृष्टान्त नहीं देना है लेकिन प्रैक्टिकल करना है। अब तुम बच्चों को वापिस घर जाना है। तुम बाप से वर्सा पा रहे हो तो अन्दर में खुशी होनी चाहिए।

5] बाप कहते हैं कितनी गुह्य-गुह्य बातें तुमको सुनाता हूँ, जो सुनकर धारण करना है। धारणा नहीं होगी तो कच्चे रह जायेंगे।

6] हर गुण वा ज्ञान की बात को अपना निज़ी संस्कार बनाओ।

❋ **सेवा-**

1] बाप कहते हैं मैं उन आत्माओं को याद करता हूँ, जो सर्विस करते हैं वह ऑटोमेटिकली याद आते हैं। आत्मा में मन-बुद्धि है ना। समझते हैं कि हम फर्स्ट नम्बर की सर्विस करते या सेकण्ड नम्बर की करते हैं। यह सब नम्बरवार समझते हैं। कोई तो म्युजियम बनाते हैं, प्रेजीडेण्ट, गवर्नर आदि के पास जाते हैं। जरूर अच्छी रीति समझाते होंगे।

2] पहले तो कोई को अलफ-बे ही पढ़ना पड़ता है। बोलो तुमको दो बाप हैं– हद का और बेहद का। हद के बाप के पास जन्म लेते हो विकार से। कितने अपार दु:ख मिलते हैं। सतयुग में तो अपार सुख हैं। वहाँ तो जन्म ही मक्खन मिसल होता है। कोई दु:ख की बात नहीं। नाम ही है स्वर्ग। बेहद के बाप से बेहद की बादशाही का वर्सा मिलता है। पहले है सुख, पीछे है दु:ख। पहले दु:ख फिर सुख कहना रांग है। पहले नई दुनिया स्थापन होती है, पुरानी थोड़ेही स्थापन होती है। पुराना मकान कभी कोई बनाते हैं क्या। नई दुनिया में तो रावण हो न सके। यह भी बाप समझाते हैं तो बुद्धि में युक्तियां हों। बेहद का बाप बेहद का सुख देते हैं। कैसे देते हैं आओ तो समझायें। कहने की युक्ति चाहिए। दु:खधाम के दु:खो का भी तुम साक्षात्कार कराओ।

3] हम तो सूर्यवंशी बनते हैं मनुष्यों को थोड़ेही पता है। वह तो सबका भगवान् कहते रहते हैं। अंधकार कितना है। तुम कितना अच्छी रीति समझाते हो। टाइम लगता है। जो कल्प पहले लगा था, जल्दी कुछ भी कर नहीं सकते। हीरे जैसा जन्म तुम्हारा यह अभी का है। देवताओं का भी हीरे जैसा जन्म नहीं कहेंगे। वह कोई ईश्वरीय परिवार में थोड़ेही हैं। यह है तुम्हारा ईश्वरीय परिवार। वह है दैवी परिवार। कितनी नई-नई बातें हैं।

4] बोलो, तुम देवताओं को तो देवता कहते हो फिर कृष्ण को भगवान् क्यों कहते हो। विष्णु कौन है?

5] बैज़ पर भी तुम अच्छा समझा सकते हो।

6] बहुत बच्चे भी विचार सागर मंथन कर अच्छी-अच्छी प्वाइंट्स सुनाते हैं। बाबा देखते हैं, सुनते हैं जैसी-जैसी अवस्था ऐसी-ऐसी प्वाइंट्स निकाल सकते हैं। जो कभी इसने नहीं सुनाई है वह सर्विसएबुल बच्चे निकालते हैं। सर्विस पर ही लगे रहते हैं। मैगज़ीन में भी अच्छी प्वाइंट्स डालते हैं।

7] यह लक्ष्मी-नारायण विश्व के मालिका थे ना। उन्हों का पढ़ाने वाला जरूर बाप ही होगा। यह भी तुम समझा सकते हो। उन्होंने राज्य पद पाया कैसे? मन्दिर के पुजारी को पता नहीं। तुमको तो अथाह खुशी होनी चाहिए। यह भी तुम समझा सकते हो ईश्वर सर्वव्यापी नहीं। इस समय तो 5 भूत सर्वव्यापी है। एक-एक में यह विकार हैं। माया के 5 भूत हैं। माया सर्वव्यापी है। तुम फिर ईश्वर सर्वव्यापी कह देते हो। यह तो भूल है ना। ईश्वर सर्वव्यापी हो कैसे सकता। वह तो बेहद का वर्सा देते हैं। कांटो को फूल बनाते हैं। **समझाने की प्रैक्टिस भी बच्चों को करनी चाहिए।**